IJGMRA | ISSN (online): 3107-6483
April-June 2026 | Vol. 2 | Issue 1

गांधी दर्शन: तुम में हम, हम में तुम

डॉ. अमित कुमार पाण्डेय*

*सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नागरिक पी. जी. कॉलेज जंघई, जौनपुर
ईमेल: amit049613@gmail.com
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.22269442

गुजराज के काठियावाड़ रियासत में 2 अक्टूबर 1869 को जन्में गांधी का जन्म एक ऐसे युग की आहट के रूप में हुई जिससे एक ऐसे साम्राज्य की नींव हिली जिसके साम्राज्य का कभी सूर्यास्त ही नहीं होता था। इनकी परवरिश एक सक्षम समृद्ध परिवार में हुई। मां, बच्चे के जीवन की पहली पाठशाला होती है, इसे चरितार्थ करते हुए मोहनदास के संस्कारों एवं मूल्यों में मां पुतली बाई का प्रत्यक्ष प्रभाव परिलक्षित होता है। सिनेमा समाज पर कैसा असर डालता है। इसकी बानगी भी राजा हरिश्चन्द नाटक देखने से गांधी के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। श्रवण कुमार की कहानी ने भी इन्हें इनके मूल्य को गढ़ने की नींव की काम किया। गांधी जी के पिता राजकोट के दीवान थे और इनके घर पर अनेक धर्मावलंबियों जैसे मुसलमान, पारसी आदि का आगमन आए दिन होता रहता था। इस दौरान इनकी उपस्थिति से गांधी पर सभी धर्मों को जानने और अपने धार्मिक विचारों में सहिष्णु एवं समधार्मिक होने का गुण विकसित होता गया। इस प्रकार महात्मा गांधी अपने समय के शिशु के रूप में होते हुए अपने समय से काफी आगे थे।

बैरिस्टर की पढ़ाई इंग्लैण्ड से करके भारत वापस आने और अब्दुल्ला- अब्दुल्ला का केस लड़ने दक्षिण अफ्रीका जाने से इनके जीवन की सार्वजनिक गति प्रारम्भ हुई। यह व्यावसायिक आरम्भ एक ऐसे मोड़ की तरफ मुड़ा जिसने पूरी दुनिया को ही मोड़ दिया। अफ्रीका में गोरों द्वारा अश्वेतों के साथ किए जा रहे अमानवीय व्यवहार ने महात्मा गांधी को यूनियन जैक के खिलाफ कर दिया। इस प्रकार के दुव्र्यवहार का सामना स्वयं गांधी ने मोरिसवर्ग रेलवे स्टेशन पर किया। वहां गांधी ने इसका विरोध शुरू किया। सत्य, अहिंसा, असहयोग के मानवतावादी अस्त्रों नीत, गांधी दर्शन की कार्यात्मकता को पूरे हिन्दुस्तान को आजादी की लड़ाई में तुम में हम और हम में तुम की बानगी पेश करता है।

महात्मा गांधी की आत्मकथा सत्य के साथ मेरे प्रयोग ऐसा दस्तावेज है जो लिखने से पहले किया गया और करने से पहले जिया गया। इसलिए गांधी ने भी माक्र्स की तरह कहा कि गांधीवाद जैसा कुछ है नहीं। गांधी एक बहुरूपिया है जैसा चार्ली चैप्लिन है। गांधी जी द्वारा परिस्थितियों का सामना करते हुए जो जिया गया, जो किया गया, उनका चिन्तन, मनन और निदिध्यासन उनका सत्य के साथ साक्षात्कार जैसा होता चला गया और प्रशान्त अराजकतावादी दर्शन के रूप में तब्दील

होता गया। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में उसकी खुद की क्षमता और परिस्थितियों का अचूक प्रभाव रहता है। ऐसा ही गांधी जी के साथ हुआ। इनकी चिन्तन पद्धति गीता, जॉन रस्किन, टॉलस्टॉय, कुरान, राम आदि से विकसित हुई। गांधी का सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और प्रेम पर अधिपत्य अतुलनीय था। जो सत्य को हृदय की आवाज और ईश्वर को प्रेम के रूप में स्वीकार करते थे। उनका कहना था कि यदि कोई अपने व्यक्तिगत जीवन में सत्य को ईश्वर के रूप में पाने की परीक्षा करें तो उसको सत्य का व्रत, ब्रहाचर्य का व्रत, अहिंसा का व्रत, गरीबी का व्रत और त्याग का व्रत आदि पालन करना होगा। गांधी द्वारा अपनाए गए विभिन्न उपकरणों में सबसे प्रभावशाली उपकरण अहिंसा का था। इनके लिए शैतानी युद्ध च्युइंगम की तरह था जो खिंचता चला जाता है। गांधी की आंदोलनात्मक तकनीकि पर अध्ययन करने वाले जेने शार्प ने 'Democracy of Non Voilence' में अहिंसा के 199 तरीके गिनाए हैं।

गांधी का चिंतन तत्वमीमांसा 'Metaphysics' और ज्ञानमीमांसा 'Epistemology' और नीतिशास्त्र 'Ethics' का शानदार समन्वय है। तत्वमीमांसा वास्तविकता क्या है? की खोज करती है। गांधी इसी वास्तविकता को निहारते है। वो इसी अवधारणा को 'रामराज्य' से अनुबंधित करते हैं। सत्य, अहिंसा, प्रेम, ईश्वर आदि को 'तुम' में 'हम' जैसा देखते है। मानवता का वह अटूट विश्वास तत्वमीमांसीय धागा ही है जिसका गांधी जीवन में दर्शन होता है। दूसरी तरफ ज्ञानमीमांसा की अवधारणा आकाश में प्रकाश के वक्री मार्ग की तरह है जो विभिन्न उपकरणों के द्वारा, तर्क द्वारा स्थापित होता है। पूरा ब्रह्माण्ड शाश्वत नियमों द्वारा शासित होता है। संसार सत्य से संचालित होता है और वह सत्य प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण में मौजूद होता है। गांधी का मानना था कि आज हम इसी बीज तत्व को दरकिनार कर शरीर को अहमियत देने लगे है। समाज 'बाडी केन्द्रित' होता जा रहा है। 'हम' और 'तुम' का वजूद भौतिक सीमा तक सिमटता जा रहा है। और सारी समस्याओं की जड़ इसी एक पक्षीयता में है। मानव को आत्म तत्व, चरित्र पर जोर देना चाहिए। इसी से समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान संभव है।

आधुनिक समय में बढ़ते आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, भौतिकवाद, गृहयुद्ध आदि जैसी गंभीर समस्याएं व्यक्तिगत अथवा सामाजिक नैतिक पतन की वजह से, हमारी अतिशप लालसा की वजह से बढ़ती जा रही है। इसके मूल में अतिशय इच्छाओं की तरफ भागना है। जो कभी पूरा नहीं हो सकती। गांधी ने स्वयं कहा कि पृथ्वी समस्त मानव जाति का पालन तो कर सकती है परन्तु एक लालची व्यक्ति का पेट नहीं भर सकती। गांधी पर लोग आधुनिक समाज से पीछे का व्यक्ति होने का आरोप लगाते हैं परन्तु वे इस बात को भूल जाते हैं कि गांधी का विरोध उन्हीं चरित्रों से था जो मानव-मानव के बीच भेद करे, मानव को किसी दूसरे मानव का साधन बना दे और मानव को समाज में हाशिए पर रख दे। वे मानव को सभी वस्तुओं

का मानदण्ड मानते हुए प्रकृति के प्रत्येक घटक के अस्तित्व एवं संरक्षण के हिमायती थे। जिसकी परम्परा भारतीय एवं यूनानी दर्शन से होती चली आ रही थी।

आधुनिक समय में लोगों में भौतिक वासना के प्रति रोमांच 'Craze' बढ़ता जा रहा है। गांधी जी आशावादी थे और उनका मानना था कि यदि व्यक्ति के इस 'Craziness' को समाप्त कर दिया जाय तो वह नैतिक बन जाएगा। और इसके लिए राज्य रूपी संस्था की या 'अभिजातीय हरावल' (Elitist Vanguard) की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसकी प्रक्रिया तो 'स्व' (Self) से शुरू होनी चाहिए। स्वराज से शुरू करनी चाहिए। स्वराज अर्थात् 'Self-Rule' गांधी ने स्वराज के दो पहलू बताएं। प्रथम, सत्य और द्वितीय अहिंसा गांधी के नजरिए में सत्य के विभिन्न आयाम होते हैं। यह रोजमर्रा की जिन्दगी में भी प्रकाशित होता है। उनके लिए सही कार्य करना ही सत्य है। इस प्रकार-

एक सत्य नैतिक जीवन के रूप में।

एक सत्य अमूर्त तत्व के रूप में।

एक सत्य निरपेक्ष ईश्वर के रूप में।

गांधी का मानना था कि यदि सत्य के इस व्यापक रूप को आत्मसात कर लिया जाय तो सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाएगा, क्योंकि ऐसा किया जाना उसकी जड़ पर प्रहार करने जैसा है, और यदि समस्याएं उद्भूत भी हुई तो उनका निराकरण संभव होगा। इसी प्रकार अहिंसा के मूल तत्व में गांधी का मानना था कि हरेक में एक सर्वोच्च दैवीय शक्ति का वास होता है। परमात्मा हर आत्मा में है। जब हर आत्मा में हैं तो सब समान है अर्थात् Not only equal but identical absolute और जब Identical है तो लोगों में एक केवल एक रिश्ता है और वह है प्रेम।

प्रेम का तात्पर्य गांधी ने 'Care & Concern of all' अर्थात् Wiping every tear from every eye से लगाया और नकारात्मक शब्दों में यही अहिंसा का रूप भी है। अहिंसा का तात्पर्य केवल दूसरों को चोट पहुंचाने से खुद को रोकना मात्र नहीं है बल्कि दूसरों की भलाई करना और चिंतित रहना अहिंसा है। यह खुद में 'तुम' जैसा देखना सीखना है। इसीलिए ये युग साहसियों का है कापरों का नहीं। जैसा राष्ट्रकवि दिनकर जी ने भी कहा-क्षमा शोभती उस भुजंन को जिसके पास गरल हो अर्थात् माफी या सहनशीलता केवल उसको ही शोभा देती है जो शक्तिशाली होता है। गांधी ने अपने तमाम अनुभवों, चिन्तनों का प्रयोग राजनीति में किया। औपनिवेशिक साम्राज्य के विरूद्ध गांधी इन्हीं मूल कृत्यों को सत्याग्रह के रूप में समवेत तरीके से प्रयोग कर रहे थे। गांधी के अनुसार सत्याग्रह का तात्पर्य सत्य के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा आग्रह है। यह

वही शख्स कर सकता है जो साहसी, नैतिक, समभावी और खुद को अत्यंत सीमित संसाधनों एवं जरूरतों में मस्त रहने का गुण रखने वाला होगा। इन गुणों प्रज्ञा, साहस, उत्पादन का प्रस्फुटन होने पर 'व्यक्तिगत न्याय' के साथ 'सामाजिक न्याय' को स्थापित करने में बल मिलता है। इससे 'स्व' का प्रसार और 'पर' का संकुचन होता है। जैसा शास्त्रों में कहा गया है, अयम् निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम, उदारचरितानाम् तू वसुधैव कुटुम्बकम्। यही गांधी का 'हम' में 'तुम' और 'तुम' मैं 'हम' का दर्शन है।

गांधी इस बात से वाकिफ हैं कि एक सच्चा इंसान बनाने के लिए एक सम्यक तालीम जरूरी है। इसीलिए उन्होंने '3H' (Hand, Heart & Head) की शिक्षा पद्धति पर जोर दिया। Hand का तात्पर्य बालक को प्रारम्भिक शिक्षा के समय से ही व्यावसायिक शिक्षा का दिया जाना। जिससे स्वावलंबन की यात्रा बचपन से ही प्रस्फुटित हो सके। Heart से ऐसी तालीम का तात्पर्य है जो बच्चों में भावनात्मक पक्ष को मजबूत कर सके, उसके चरित्र का निर्माण कर सके। Head से तात्पर्य ऐसी शिक्षा का प्रबन्ध करना है जो विज्ञान, नवाचार, अनुसंधान, तकनीकि आदि पर निर्भर हो जो समस्त मानव जाति का कल्याण कर सके।

पारिस्थितियों, दर्शन, चिन्तन से हर युग प्रभावित होता है, और गांधी उससे अछूते नहीं थे। इनके ऊपर अनेक विद्वानों/दर्शनों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जान रस्किन के अल्पमतवाद से प्रभावित होकर इसे सर्वोदय/ अन्त्योदय तक ले गए। टालस्टाप के 'जीवित रहने के लिए कर्म' के विचार और जान रस्किन के ही 'unto the last' से बहुत गहरे तक प्रभावित थे। बाइबिल के इस सिद्धान्त से भी इत्तेफाक रखते थे कि अपने माथे के पसीने की रोटी खाओं। उनके राष्ट्र निर्माण की सजग दृष्टि इसी से लगाई जा सकती है कि गांधी प्रत्येक व्यक्ति के काम को समान अहमियत देते थे। चाहे वो दिहाड़ी का मजदूर हो या चाहे एक प्रोफेसर क्योंकि राष्ट्र निर्माण में दोनों का योगदान अनिवार्य है। गांधी मैकियावेली के विपरीत साध्य एवं साधनों की पवित्रता पर समान जोर देते हैं। वे 'End Justifies the means' को सीधे से नकार देते हैं। उनका मानना था कि गलत रास्ते से सही मंजिल पर कभी भी नहीं पहुंचा जा सकता है।

एक दार्शनिक अराजकतावादी होने के नाते गांधी राज्य की मुखाफलत करते हैं। ये रामराज्य की हिमायत करते हैं। यहां राम और राज्य दोनों दार्शनिक दृष्टि रखते हैं। यहां राम का तात्पर्य जैविक सृष्टि नहीं और राज्य का तात्पर्य संप्रभु भौगोलिक शक्ति नहीं बल्कि एक ऐसा शासन जो सत्य, अहिंसा, प्रेम से संचालित हो। राजनीति के चार स्तम्भ, साम, दाम, दण्ड, भेद से दण्ड और भेद की समाप्ति के पैरोकार थे। इस प्रकार गांधीवाद कोई मैलिक सिद्धान्त नहीं बल्कि यह विचारों, मूल्यों व सिद्धान्तों तथा कर्मयोग का ऐसा समेकन है जो संघर्षशील दुनिया में अति प्रासंगिक है। संसार भौतिकता को ओढ़ते

हुए आधुनिक बनना चाहता है जो उसे केवल जड़ता के पाश में जकड़ता चला जा रहा है। यदि आरोपण का चरण चलता है तो उखड़ने का चरण भी आता है। मानव, प्रकृति को जानने के बजाय उस पर विजय प्राप्त करना चाहता है। प्रकृति बदल रही है, तो प्रकृति का स्वतः समायोजनकारी तंत्र बर्बादी लाकर संतुलन स्थापित करता है। एक तरफ प्रकृति को छोड़कर आगे बढ़ने तो दूसरी तरफ मानवता/(नैतिकता)/मूल्य को छोड़कर पीछे बढ़ने के द्वि-अंतराल को पाटने का केाई काम कर सकता है तो वह गांधी दर्शन ही है। दुनिया के करीब 59 देश संघर्षरत है तो दादागिरी का सपना दुनिया को खाक में मिलाने को आतुर है। ऐसी स्थिति में गांधी का जीवन, गांधी का दर्शन और गांधी का कर्म, जड़ और चेतन में व्यक्ति और समुदाय में, राज्य और विश्व में हम और तुम में, तुम और हम में एकाकार करने की राह दिखाता रहेगा।

संदर्भ:

- अग्रवाल, लक्ष्मी नारायण. (2010–11). आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन. आगरा.
- Rudolph, L. I., & Rudolph, S. H. (Eds.). (1967). Modernity and post-modernity. university of Chicago.
- प्रसाद, ज्योति. (2010–11). राजनीतिक विचारों का इतिहास (भाग–3). के. एन. नाथ कंपनी.
- Sharp, G. (1973). Democracy of non-violence. The Albert Einstein Institution, Boston, Massachusetts, USA.
- Iyer, R. (1977). The moral and political thought of Mahatma Gandhi. Oxford University Press.
- जैन, हेमंत. (2020). गांधी का सर्व सेवा संघ. सर्व सेवा संघ प्रकाशन.
- शरण, शंकर. (2012). गांधी के ब्रह्मचर्य प्रयोग. राजपाल एंड सन्स.
- नागर, पुरुषोत्तम. (2009). आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन. हिंदी ग्रंथ अकादमी.
- Gandhi, M. K. (1940). The story of my experiments with truth: An autobiography. Deluxe Hardbound Edition. Navjeevan publising house ahamedabad.
- Mishra, A. D. (1995). Fundamentals of Gandhism.
- Rousseau, J.-J. (1762). Emile, or on education.
- महोपनिषद् (अध्याय 4, श्लोक 71).
- दिनकर, रामधारी सिंह. (1946). कुरुक्षेत्र. राजपाल एंड सन्स.